प्रसार पत्र-6

बकरी पालन

एक लाभकारी व्यवसाय

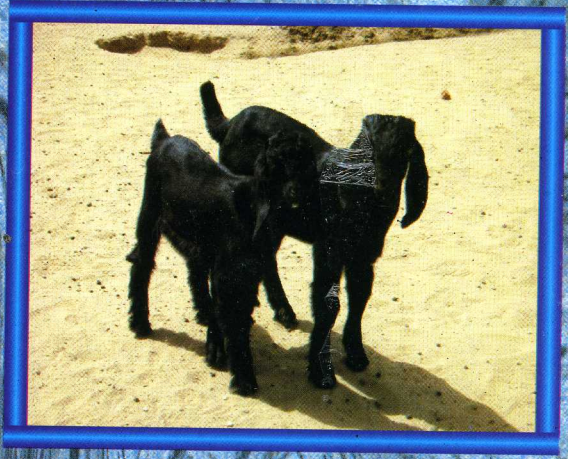

डॉ. जी. सी. गहलोत

प्रभारी, बकरी उन्नयन परियोजना

पशु आनुवांशिकी व प्रजनन विभाग

पशु चिकित्सा एवं

पशु विज्ञान महाविद्यालय

राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय

बीकानेर

बकरी पालन

एक लाभदायक व्यवसाय

प्राचीन काल से ही बकरी पालन ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति का अभिन्न अंग चला आ रहा है। राजस्थान की मरूभूमि में विशेष कर इसके पश्चिमी भाग में जहां इंदिरा गांधी नहर से सिचांई नही होती है वहां के पशुधन में बकरी का एक महत्वपूर्ण स्थान है। भारतवर्ष में उन्नत नस्ल की बकरी की 20 प्रजातियां पाई जाती है। इनमें से जकराना, सिरोही तथा मारवाड़ी नस्ल की बकरियां राजस्थान में पाई जाती है। जकराना व सिरोही नस्ल की बकरियां दूध के लिए अच्छी समझी जाती है। मारवाड़ी नस्ल की बकरी पश्चिम राजस्थान में पाई जाती है तथा मांस के लिए अच्छी मानी जाती है। मारवाड़ी बकरी में मांस के साथ दुग्ध उत्पादन भी महत्वपूण है क्योंकि अधिक दूध उपलब्ध होने पर बकरी के बच्चो को अधिक दूध मिल पाता है जिससे बच्चो के शारीरिक भार मे वृद्धि होती है तथा सालभर के बकरे व बकरियां बेचने पर ज्यादा आमदनी होती है।

पश्चिमी राजस्थान की गोचर भूमि में पाले की झाड़िया बहुतायत मे पाई जाती हैं जिससे पशु पालक बकरियों के रेवड़ को दिनभर घूमाकर चराते रहते है। अकाल के समय बकरी पालक सिंचित क्षेत्र की तरफ बकरियों के रेवड़ को लेकर चले जाते है। इस तरह चराने से पशुपालको को बकरियों के भरण–पोषण के लिए खर्च नही के बराबर आता है।

पश्चिमी राजस्थान में बकरी पालन से निम्न प्रकार से आय प्राप्त की जा सकती है।

1. मुख्य रूप से लगभग एक साल के बकरे बेचने से होती है।
2. बकरी की मींगनी खेत में खाद के रूप में उपयोग की जाती हे। मींगनी की खाद गोबर की खाद से अच्छी और अधिक समय तक उत्पादन में वृद्धि करती है। इस खाद में नाइट्रोजन फास्फेट तथा पोटाश मुख्य रूप से होते है। अगर इसका समय पर उपयोग किया जाये तो इसकी उत्पादन क्षमता किसी भी तरह में रासायनिक खादो से कम नही है। एक बार भेड़ बकरी की खाद देने के बाद तीन फसल तक खेत मे खाद देने की आवश्यकता नही पड़ती है। सब्जी उगाने के लिए इसकी खाद सर्वोतम है। बहुत सी जगह तो फसल काअने के बाद खाद के लिए बकरियें को खेतो में चराया जाता है तथा बकरी पालक को कुछ पैसे अतिरिक्त दिये जाते है।
3. बकरी के दुग्ध से भी आय प्राप्त होती है परन्तु यह इतना नहीं बिकता क्योंकि इसमें थोड़ी गंध आती है। विदेशों मे बकरी के दुग्ध का पनीर बहुत महंगा बिकता है। धीरे–धीरे अपने यहां भी बकरी के दुग्ध का बाजार विकसित हो जायेगा। बकरी के दूध का दही अच्छा होता हैं तथा इसका दूध गाय–भैंस के दूध के साथ मिलाकर भी बेचा जा सकता हैं दुग्ध बढ़ाने के लिए बकरी को 100 ग्राम दाना प्रति बकरी प्रतिदिन के हिसाब से देना चाहिए।

4. बकरी के बाल ऊँट के बाल तथा भेड़ के मोटे रेशे वाली ऊन के साथ मिलाकर कम्बल, गलीचा, भाकला, सलीता, बोरा आदि बनवाने में उपयोग किये जाते है। इन क्षेत्रों मे यह कार्य लघु उद्योग के रूप में किया जाता है।

5. बकरी से प्राप्त खाल का उपयोग जूते, चमड़े के सामान व पानी की मशक बनाने में किया जाता है। इसकी खाल से बने पदार्थ से विदेशी मुद्रा भी प्राप्त की जा सकती है।

6. बकरी पालन का लघु व्यवसाय के रूप में पनपाया जावे तो गांव के व्यक्तियों को रोजगार भी उपलब्ध हो सकता है। जैसे बकरियो को चराई के लिए चारागाह में ले जाने के लिए, एक वर्ष के बकरे–बकरियों को मंडी मे बेचने के लिए तथा बकरी के दुग्ध व दुग्ध उत्पादन तथा चमड़े के उत्पादन के कार्य से भी रोजगार प्राप्त हो सकते है।

बकरी पालन से अधिकतम लाभ लेने के लिए ये बाते ध्यान में रखनी जरूरी है।

1. अच्छी नस्ल के पशु रखे। पश्चिमी राजस्थान के लिए मारवाड़ी नस्ल की बकरी सर्वोतक है। ये मजबूत होती है और उनमे रोग बर्दाश्त करने की क्षमता होती है। इनका मांस अच्छा माना जाता हैं दिल्ली व बम्बई की मांस मंडियो में इनकी काफी मांग हैं। मारवाड़ी बकरियों मंझोले कद की होती है। इनका मुंह छोटा और नाकी की हड्डी मजबूत होती है। गर्दन भारी होती है, कान बड़े होते है और सींग मुड़े हुए व नुकीले होते है।

जबड़ा घनी दाढ़ी से भरा होता है। इनकी पूंछ ऊपर की ओर मुड़ी हुई और बाल खडे होते हैं

2. पशुओं को संतुलित आहार ही खिलाये ताकि अवयस्क पशु जल्दी वयस्क हो सके और मादा पशु अपनी दुग्ध उत्पादन क्षमता को पूर्णत व्यक्त कर सके। मेमनों को यदि 100 ग्राम दाना प्रतिदिन दिया जावे तो उनके शारीरिक भार में उल्लेखनीय वृद्धि होती हे। प्रजनन काल से पूर्व वयस्क बकरियों को 100 ग्राम दाना प्रति बकरी प्रति दिन दिया जाना चाहिए जिससे सभी बकरियां गर्मी में आते तथा ग्यामन हो जावें।
3. पशुओ को हमेशा साफ जल ही पिलावें। पोखरो का रूका हुआ जल पीने से बकरियों में परजीवी रोग उत्पन्न हो जाते है।
4. मारवाड़ी नस्ल की बकरियों सामान्यतयः 12–16 माह की आयु में वयस्क हो जाती हैं ये जून–जुलाई तथा कुछ हद तक नवम्बर से फरवरी की अवधि में गर्मी में आ जाती है। इन महिनो में वे 18 से 21 दिन के अन्तर से निरन्तर (यदि गर्भवती अथवा जनन सम्बन्धी कोई रोग न हो) गर्मी पर आती है। यह काल सर्दियों में लगभग एक दिन तथा गर्मियों में 2–3 दिन तक रहता है। गर्मी मे आने पर बकरियों में बैचेनी, बार–बार आवाज करना, पूंछ हिलाना, योनि का सूजना व लाल हो जाना, भोजन के प्रति अरूचि तथा दुधारू पशु का दुग्ध उत्पादन का हो जाना आदि लक्षण दिखाई देते है। लगभग 25

किलो शारीरिक वजन हो जाने पर ही मादा पशु को गामिन कराना उचित है। गर्मी पर आने के 10 से 15 घण्टे की अवधि मे एक बार गर्भाधान कराना अच्छा है।

5. अपने मादा बकरियो को उन्नत नस्ल के बकरे से ही गामिन कराना चाहिए।
6. गर्भाधान के लगभग डेढ महिले के बाद अपने मादा पशुओं के गर्भ परीक्षण कराना चाहिए।
7. अपनी सामर्थ से अधिक पशु न रखे। अधिक संख्या में पशु पालने से आप न तो उन्हे संतुलित आहार दे सकते है और न ही उनकी उचित देखभाल कर सकते है।
8. अनुत्पादक व कम उत्पादन या बीमार पशुओं को समय–समय पर छंटनी करते रहे ताकि उन पर अनावश्यक व्यय न करना पड़े। इस काम के लिए उनका प्रजनन, दुग्ध उत्पादन व आय–व्यय का लेखा रखने से सहायता मिलती हैं
9. रोग उपचार व बचाव की ओर विशेष ध्यान दे।

अगर ऊपर बताई सभी बाते ध्यान में रखेंगे तो आपको बकरियें से निश्चित रूप से अधिक लाभ होगा।